योगसूत्र में कर्म की अवधारणा

डॉ. राम किशोर

सहायक आचार्य (योग)

स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज,

छत्रपति शाहू जी महाराज, विश्वविद्यालय, कानपुर

योगसूत्र में कर्म के भेद

कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस्त्रिविधिमितरेषाम्।

योगसूत्र 4.7।

कर्म अशुक्ल अकृष्णं योगिनः त्रिविधिः इतरेषाम्।

- योगियों के कर्म अशुक्ल और अकृष्ण होते हैं।
- अन्यो के कर्म कम तीन भेद हैं– 1. शुक्लकर्म 2. अकृष्ण कर्म 3. शुक्ल कृष्ण मिश्रित कर्म

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः। योगसूत्र 2.12

क्लेशमूलक कर्म संस्कारों का समुदाय दृष्ट (वर्तमान) तथा अदृष्ट (भविष्य में होने वाले) दोनों प्रकार के ही जन्मों में भोगा जाने वाला है।

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः। योगसूत्र 2.13

मूल के विद्यमान रहने तक उस (कर्माशय) का परिणाम पुनर्जन्म, आयु और भोग होता रहता है।

ते ह्लादपरितापलाः पुण्यापुण्यहेतुत्वात्। योगसूत्र 2.14

वे (जन्म, आयु और भोग) हर्ष एवं शोक रूप फल प्रदान करने वाले होते हैं, क्योंकि उनके पुण्यकर्म और पापकर्म दोनों ही कारण है।

परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः। योगसूत्र 2.15

परिणाम, ताप और संस्कार दुःख ये तीन प्रकार के दुःख सभी में स्थिति रहने के कारण और तीनों गुणों की वृत्तियों में परस्पर विरोध होने के कारण विवेकशील के लिए सब के सब (कर्मफल) दुःख रूप ही है।

ततस्ताद्विपाकानुगुणानामेवाभिव्यक्तिर्वासनानाम्

योगसूत्र 4.8।

तत् तद् विपाकानुगुणाम् एव अभिव्यक्तिः वासनानाम्

उन तीन प्रकार के कर्मों से उनके फल भोगों के अनुसार ही वासनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

पूर्व जन्मों की वासनाएं संस्कार के रूप में अन्तःकरण में एकत्र रहती है, जिनके दो भेद हैं–

1. स्मृति मात्र फलवाली
2. जाति, आयु तथा भोगरूप फलवाली।

कर्मों के अनुसार ही ये वासनाएं प्रकट होती है। जिस प्रकार के कर्मफल से मनुष्य जन्म ग्रहण करता है, उसी प्रकार की स्मृति वासनाएं दूसरी उन वासनाओं को जागृत कर देती हैं, जो संस्कार के रूप में अनेक जन्मों से अन्तःकरण में संगृहीत हैं और जाति, आयु, फल, भोग वाली हैं। शेष वासनाएं चित्त भूमि में प्रसुप्त होकर दबी रहती हैं।

जातिदेशकालव्यवहितानामप्यानन्तर्यं स्मृतिसंस्कारयोरेकरूपत्वात्।

योगसूत्र 4.9।

जाति, देश और काल इन तीनों के व्यवधान रहने पर भी कर्म संस्कार में भेद नहीं होता है।

हेतुफलाश्रयालम्बनैः संगृहीतत्वादेशामभावे तद्भावः।

योगसूत्र 4.11।

हेतु, फल, आश्रय और आलम्बन इन चारों के द्वारा वासनाएं संग्रहीत होती है। अतः इन चारों के अभाव होने से उनका भी अभाव होता जता है।

धन्यवाद

Thanks